मध्य रेल

भुसावल मंडल

ताप्ती

अंक 10 | त्रैमासिक ई-सूचना पत्र | जनवरी - मार्च 2014

वेबसाइट : http://www.cr.indianrailways.gov.in/about us/divisions/bhusawal

संरक्षण

महेश कुमार गुप्ता
मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शन

प्रदीप बारापात्रे
अपर मंडल रेल प्रबंधक
एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादन

राम प्रसाद शुक्ल
राजभाषा अधिकारी

सहयोग

राजभाषा विभाग
मं.रे.प्र. प्रकोष्ठ
सि.एवं दू. शाखा

संपादकीय

त्रैमासिक सूचना-पत्र तापी के इस अंक में मंडल पर संपन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इसके अलावा, 'पोलियो मुक्त भारत' और 'तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग)' पर एक सारगर्भित लेख भी इस अंक में शामिल किया गया है। आशा है कि आपको यह अंक अवश्य पसंद आएगा।

सभी सुधी पाठक बंधुओं से अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव अवश्य दें ताकि इस सूचना-पत्र को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

राम प्रसाद शुक्ल
राजभाषा अधिकारी एवं
संपादक

संपर्क का पता : राजभाषा विभाग, मं.रे.प्र.कार्यालय, मध्य रेल, भुसावल.
फोन नंबर : 011- 55010 / 55015 (रेलवे) / 02582 – 223827 (भासंनिलि).
ई-मेल: bslrajbhasha011@gmail.com

मंडल की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल वैजयंती

गतिविधियां

भुसावल मंडल 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल वैजयंती' से सम्मानित

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट प्रयोग-प्रसार करने के कारण मध्य रेल के भुसावल मंडल को रेल मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आदर्श मंडल के रूप में चयन किया गया है। रेल मंत्रालय द्वारा रेल मंत्री राजभाषा शील्ड / ट्रॉफी तथा चल वैजयंती पुरस्कार योजना के अंतर्गत भुसावल मंडल को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल वैजयंती से सम्मानित किया गया है। रेल भवन नई दिल्ली में 06 मार्च, 2014 को आयोजित बैठक के दौरान रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री अरूणेंद्र कुमार द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

चल वैजयंती

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड चल वैजयंती प्रदान करते हुए

महाप्रबंधक , मध्य रेल चल वैजयंती प्रदर्शित करते हुए

मंरेप्र, भुसावल, मध्य रेल चल वैजयंती के साथ

राजभाषा प्रदर्शनी (29.01.2014)

श्री सुनील कुमार सूद, महाप्रबंधक, मध्य रेल राजभाषा प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुए

श्री सुनील कुमार सूद, महाप्रबंधक, मध्य रेल मंरेप्र द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों का अवलोकन करते हुए

श्री सुनील कुमार सूद, महाप्रबंधक, मध्य रेल त्रैमासिक ई-सूचना पत्र 'ताप्ती' अंक 08 का लोकार्पण करते हुए

राजभाषा प्रदर्शनी (29.01.2014)

श्री आर.डी.त्रिपाठी, मुख्य परिचालन प्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, मध्य रेल
राजभाषा प्रदर्शनी एवं बाबू देवकीनंदन खत्री हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय का निरीक्षण करते हुए

हिंदी साहित्यकारों की जयंती

आरओएच डिपो, भुसावल
रांगेय राघव की जयंती
(17.01.2014)

बीटीसी (सतथामा), भुसावल
महादेवी वर्मा की जयंती
(26.03.2014)

एटीटीएस, भुसावल
भवानी प्रसाद मिश्र की जयंती
(29.03.2014)

पाठक मंच की बैठक

आरओएच डिपो, भुसावल

बीटीसी (सतथामा), भुसावल

एटीटीएस, भुसावल

दो बूँद जिंदगी के

महिला समाज सेवा समिति, भुसावल द्वारा आयोजित पल्स पोलियो अभियान (19.01.2014)

गणतंत्र दिवस समारोह (26.01.2014)

श्री महेश कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात परेड का निरीक्षण करते हुए

श्री प्रदीप बारापात्रे, अपर मंडल रेल प्रबंधक

भारत स्काउट एवं गाइड , भुसावल द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए

वैश्विक पोलियो उन्मूलन अभियान

पोलियो का पहला प्रमाण

पोलियो का पहला सबूत मिश्र सभ्यता की एक पत्थर पर बनी कलाकृति में दिखाई पडती है। यह करीब तीन हज़ार साल पुरानी है।

- 1952 में पोलियो को सबसे संक्रामक और खतरनाक बीमारी माना जाता था। अकेले अमेरिका में 21 हज़ार मामले सामने आए थे।
- 1955 में डॉ. जोनास साल्क ने पहला इंजेक्शन वैक्सीन बनाया।
- 1961 में डॉ. अल्बर्ट सैबिन ने ओरल पोलियो ड्रॉप बनाई।
- फिर यूनिसेफ, डब्ल्यूएचओ, रोटरी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान शुरू किया।
- 1988 में 125 देशों में अपनी जडें जमा चुकी थी।
- 1994 में अमेरिका पूर्णतया पोलियोमुक्त।
- 1995 में पूर्वीयूरोप, अफ्रिका, मध्य और दक्षिन-पूर्व एशिया में अभियान।
- 2000 में 37 देशों को पोलियोमुक्त घोषित किया गया।
- 2003 में 134 देश पोलियोमुक्त घोषित किए गए।
- 2006 में सिर्फ 04 देश पोलियो संक्रमित बचे – भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और नाइजीरिया।
- 2012 में ये 03 देश ही बचे पोलियोग्रस्त - नाइजीरिया, अफगानिस्तान और पाकिस्तान ।

अभियान

- 200 देशों में चला अभियान।
- 250 करोड बच्चों का टीकाकरण।
- 18 हज़ार करोड रुपये लगे।
- 2 करोड स्वयंसेवी हर साल तैनात।

पोलियो मुक्त हुआ भारत

हर साल दो लाख पीडित बच्चों की पोलियो से मुक्त होने की कहानी

अस्सी के दशक में वैश्विक पोलियो उन्मूलन अभियान शुरू होने से पहले देश में हर साल दो लाख बच्चे पोलियो के शिकार होते थे। सन 1994 से देश ने इसे मिटाने के लिए संघर्ष शुरू किया। पोलियो का आखिरी मामला 13 जनवरी, 2011 को सामने आया था। पश्चिम बंगाल के हावडा जिले में दो साल की लडकी को पोलियो हुआ था। पिछले तीन साल में पोलियो का एक भी मामला सामने नहीं आया है। लोग जगे, कदम बढाया और सरकार के साथ मिलकर अपनी अगली पीढी को मजबूत पैरों पर खडा कर दिया। अब भारत पोलियो मुक्त देश हो गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 11 फरवरी, 2014 को भारत को पोलियो-मुक्त देश के तौर पर औपचारिक प्रमाण-पत्र सौंपा।

भारत की पोलियो के खिलाफ 20 साल की जंग

1994 : दिल्ली में पहली बार पोलियो उन्मूलन का पायलट प्रोजेक्ट चला। लक्ष्य था तीन साल तक के दस लाख

बच्चों को ड्रॉप पिलाना।

1995 : पहला राष्ट्रीय अभियान शुरू। सरकार ने 8.80 करोड बच्चों को ड्रॉप पिलाने का लक्ष्य रखा।

1999 : टाइप-2 पोलियो से मुक्त घोषित। दुनिया भर में टाइप-2 का आखिरी मामला उत्तर प्रदेश के अलीगढ में मिला। 15.90 करोड बच्चों का टीकाकरण हुआ। देश को संक्रमण के आधार पर बाँटा गया।

2001: यूनिसेफ ने उत्तर प्रदेश में सोशल मोबलाइजेशन नेटवर्क स्थापित किया ताकि समाज का हर तबका इससे जुडे। अमिताभ बच्चन को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया।

2003 : अल्पसंख्यक समुदाय के लोग पोलियो उन्मूलन के समर्थन में आए।

2006 : उत्तर प्रदेश और बिहार में अभियान को तेज किया गया। नवजात बच्चों की मॉनिटरिंग की गई।

2010 : केंद्र सरकार ने हर बच्चे पर नज़र रखने का आदेश जारी किया और कहा कि एक भी बच्चा पोलियोग्रस्त नहीं होना चाहिए।

2011 : हावडा में पोलियोग्रस्त रुखसार का केस मिला।

2012-13 : भारत को पोलियो संक्रमित देशों की सूची से बाहर निकाला गया। एक भी केस सामने नहीं आया।

महत्त्वपूर्ण बातें

- 23 लाख हेल्थ वर्कर लगे हर साल।
- 17.5 लाख बच्चों का टीकाकरण हर साल।
- 90 करोड पोलियो ड्रॉप 2011 में पिलाए गए।
- 9,125 सामुदायिक दल 30 लाख अल्पसंख्यक परिवारों से मिले।
- 9.56 लाख पोस्टर हर साल लगाए गए।
- 840 टीवी प्रचार प्रोग्राम चलाए गए।
- 2030 रेडियो स्पॉट्स।

नतीज़ा

- 2007 में 66% बचा।
- 2009 में 44
- 2010 में केवल 03 और
- 2011 में 01 फीसदी से कम।

पाँच तरीके जिनसे हमारे देश में पोलियो बेजान हुआ

- **पीडितों की पहचान :** 2001 से पीडितों की पहचान के लिए लैब की प्रमाणिकता जरूरी।
- **नेटवर्क बनाना :** देश भर में 33700 साइट्स बनाए गए। सभी अस्पतालों की नेटवर्किंग की गई।
- **टीकाकरण अभियान :** हर घर जाकर पोलियो ड्रॉप पिलाने का अभियान शुरू हुआ। इसे बाद में बढाकर स्कूल, ट्रेन, बस स्टैंड, एअरपोर्ट सब जगह चलाया गया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन से जोडा गया।
- **नवजात पर नज़र :** 2006 से नवजात की निगरानी शुरू हुई।
- **कोसी नदी / प्रवासी / सीमा :** 2008 में बिहार के कोसी नदी क्षेत्र में बडा कैंपेन चलाया गया। एक राज्य से दूसरे राज्यों में जाने वालों का अलग डाटा बनाया गया। 2011 में भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाई इलाकों में 81 पोस्ट पर ड्रॉप देने की व्यवस्था की गई।

- दैनिक भास्कर से साभार.

तापमान वृद्धि या ग्लोबल वॉर्मिंग

जब वाष्प की शक्ति का पता चला अर्थात 18वीं शताब्दी के अंतिम दौर से 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक दौर को औद्योगिक क्रांति का दौर कहा जाता है और फिर इसी दौर में बड़े-बड़े उद्योग-धंधों ने दुनिया की शक्लो-सूरत बदल दी। पहले तो यह कहा गया कि दुनिया सुंदर होती जा रही है, लेकिन फिर पर्यावरण में कुछ ऐसी हलचलें होने लगीं कि औद्योगीकरण के इस सरपट भागते घोड़े पर लगाम लगाने की बात होने लगी। लेकिन ब्रेक लगाना इतना आसान नहीं होता। अब यह कहा जा रहा है कि पिछले लगभग 200 साल में धरती का औसत तापमान एक डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और इसका दुष्परिणाम क्या कुछ हो सकता है उसकी एक बानगी अभी तक पर्यावरण में हुई हलचलों से मिल चुकी है।

लंबे अर्से से धरती के तापमान में आई वृद्धि या ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर तरह-तरह की आशंकाएं और चेतावनी प्रकट की जाती रही हैं और पिछले दिनों ब्रिटेन सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर डेविड किंग ने भी एक ऐसी ही चेतावनी दी जिसे सबसे गंभीर चेतावनी बताया गया। वह चेतावनी यह थी कि अगर पर्यावरण को दूषित करने वाले कारणों पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया तो जल्दी ही वह दिन आएगा जब धरती का तापमान तीन डिग्री सेल्सियस ऊपर चला जाएगा।

धरती के तापमान का मतलब होता है धरती के विभिन्न स्थलों के तापमान का वार्षिक औसत। अमेंरिका स्थित अंतरिक्ष संस्था नासा के गोडार्ड इंस्टीट्यूट ऑफ़ स्पेस स्टडीज़ के अनुसार वर्ष 1950 में धरती का तापमान 13.8 डिग्री सेल्सियस था और वह वर्ष 1999 में बढ़कर लगभग 14.5 डिग्री सेल्सियस हो गया।

उष्णकटिबंधीय देशों में अपनी तरह के एकमात्र संस्थान पुणे के भारतीय उष्णकटिबंध मौसम विज्ञान संस्थान के प्रोफ़ेसर जी. बी. पंत बताते हैं कि तीन डिग्री तापमान का बढ़ना वाकई चिंताजनक हो सकता है। प्रोफ़ेसर पंत ने कहा, "भारत में कई जगह गर्मियों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है और धरती के तापमान के तीन डिग्री बढ़ने से ये हो सकता है कि उन गर्म स्थलों पर तापमान पांच-छः डिग्री तक ऊपर जा सकता है"।

" अगर किसी स्थान का तापमान 50 डिग्री सेल्सियस हो गया तो वह असह्य हो जाएगा और इसलिए ऐसा अगर 200 साल में भी होता है तो भी वो काफ़ी गंभीर बात होगी। "

तापमान वृद्धि का प्रभाव

धरती के गर्म होते जाने के प्रभाव काफ़ी ख़तरनाक हो सकते हैं। एक ख़तरनाक प्रभाव तो ये बताया जाता है कि धरती के गर्म होने से पर्वतों पर ग्लेशियर या हिमखंड पिघलेंगे, फिर समुद्र के पानी का आयतन बढ़ेगा और फिर यह होगा कि समुद्र जल स्तर के बढ़ने से तटीय इलाक़े डूब जाएंगे। लेकिन जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम के तहत जलवायु परिवर्तन पर बनी अंतर्सरकारी समिति के अध्यक्ष डॉक्टर राजेंद्र कुमार पचौरी बताते हैं कि भारत और चीन जैसे विकासशील देशों में ख़तरे और भी हैं। डॉक्टर पचौरी ने कहा, " भारत-चीन जैसे देशों में मुश्किल यह है कि ग्लेशियर तेज़ी से पिघलते जा रहे हैं जिससे पीने के पानी का संकट खड़ा हो सकता है और साथ ही बाढ़ और सूखे का ख़तरा पैदा हो सकता है। इसके अलावा, स्वास्थ्य पर भी असर पड़ेगा क्योंकि ऐसे कीटाणु जो पहले नहीं जीवित रह सकते थे, वे तापमान बढ़ने पर जी सकते हैं

जिनसे बीमारियों का ख़तरा हो सकता है। "

कृषि पर असर

भारत में जिन क्षेत्रों पर असर पड़ा है उसका एक उदाहरण मिलता है कृषिक्षेत्र में गेहूँ के उत्पादन में आई गिरावट से। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद यानी आईसीएआर ने जलवायु परिवर्तन का खेती पर असर का पता लगाने के लिए एक बड़ा प्रोजेक्ट शुरू किया है। आईसीएआर में कार्यरत सहायक महानिदेशक पी. डी. शर्मा बताते हैं, " अचानक गर्मी बढ़ने से गेहूँ की बालियों में अन्न विकसित नहीं हो पाता है। " उन्होंने बताया कि गेहूँ का उत्पादन एक समय में 21 करोड़ 20 लाख टन तक चला गया था लेकिन उसके बाद उससे ऊपर नहीं जा रहा है बल्कि उसमें कमी आती गई है।

जानकारों का मत है कि धरती के बढ़ते तापमान पर नियंत्रण के लिए समय रहते कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता है और इसके लिए अमेरिका आदि विकसित देशों के अतिरिक्त भारत-चीन जैसे देशों को भी मिलकर प्रयास करने होंगे।

- साभार.

(मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग, मध्य रेल, भुसावल द्वारा केवल सरकारी उपयोग हेतु प्रकाशित)